हिन्दी की लम्बी कविताएँ एवं उनके पुरोधा कवि निराला

श्रीकृष्ण सिंह

प्रो. योगेन्द्र पाठक

आधुनिक जीवन बोध के अतिशय दबाव में हुए अनिवार्य वृहत्तर परिवर्तनों के कारण लम्बी कविता का उदय हुआ है। प्रबन्ध काव्य के विकल्प रूप में उभरी यह स्वतंत्र विधा है, परन्तु इसमें प्रबंध की अपेक्षाओं को पूर्णतः नकारा नहीं गया है,। यह सामाजिक–कलात्मक सरोकारों का निर्वाह करती हुई जीवन के किसी विशेष पक्ष को इसकी समग्रता एवं जीवन–दृष्टि की संहति में उठाती है। लम्बी कविता तब अपने समय तक ही सीमित न रहकर, अपने समय से आगे भविष्य में भी अपना दखल सिद्ध करती है। इस स्तर पर लम्बी कविता का फलक अत्यंत विस्तृत होता है।

महाकवि निराला ने युगीन आवश्यकता को दृष्टिगत रखकर राष्ट्रीयता को संस्कृति के स्वरूप में ढालकर चित्रित किया। 'भारती वंदना', यमुना के प्रति, मातृवन्दना, जागो फिर एक बार, दिल्ली, खण्डहर के प्रति, छत्रपति शिवाजी का पत्र, राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास आदि में राष्ट्रीयता का भाव स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। निराला छायावादी युग के सबसे प्रखर रचनाकार माने जाते हैं, निराला अपने नाम के अनुरूप निराले व्यक्तित्व एवं विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न थे, स्वाभिमान, आत्म–गौरव एवं विद्रोह उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ थीं।